JODHPUR ☎ 2634321

प्रोसोपिस सिनेरेरिया (एल.) ड्यूस

वितरण :- खेजड़ी पश्चिमी एशिया एवं भारतीय उपमहाद्वीप की देशज प्रजाति है।

सामान्य नाम

- खेजड़ी या लूंग वृक्ष (राजस्थान)
- भारतीय रेगिस्थान का स्वर्ण वृक्ष।
- राजस्थान एवं तेलंगाना का राज्य वृक्ष।

लाभ

- यह वृक्ष शुष्क एवं अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में पारिस्थितिकी तंत्र को परिरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- वृक्ष शुष्क क्षेत्रों के सामाजिक एवं आर्थिक विकास का प्रतीक है, जो चरवाही पशुओं, मानव एवं पक्षियों को आश्रय प्रदान करता है।
- वृक्ष के सभी भाग उपयोगी है अत: इसे कल्पवृक्ष नाम से भी पुकारा जाता है।
- खेजड़ी वृक्ष की महत्ता एवं औषधिय मूल्यों का वर्णन प्राचीन आयुर्वेदिक साहित्य में भी किया गया है।

विशेषताएँ

- खेजड़ी एक ठंड एवं सूखा प्रतिरोधी वृक्ष है जो प्राकृतिकृत तापमान विविधता को सहन करने में सक्षम है।
- ग्रीष्मऋतु में यह 114°F (46°C) एवं शीतऋतु में 50°F (10°C) तापमान सहन कर सकती है।

वृक्षारोपण

- स्वभाव- शुष्क एवं अर्द्धशुष्क क्षेत्रों का सदाबहार वृक्ष है।
- पुष्पीकरण- मार्च से मई माह के दौरान होता है, जिसके तुरन्त बाद फलियों का निर्माण होता है जो दो माह के भीतर अपनी पूर्ण लम्बाई प्राप्त कर लेती है।
- मृछा- जलोढ़ मृदा जिसमें बालु एवं चिकनी मृदा की विभिन्न मात्रा हो।
- वंश वृद्धि- पादप का प्राकृतिक पुर्नउद्भव (Regeneration) मुख्यत: बीजों के माध्यम से होता है। बीजों को बोने से पहले 24 घण्टे तक जल में भिगोकर रखा जाता है। वृक्ष अन्य खेती की फसलों के साथ संयोजन कर सिंचित भूमि में सरलता से ऊगाया जा सकता है।

कृषि में उपयोग

- खेजड़ी मूल में प्राकृतिक रूप से नाइट्रोजन स्थिरिकरण होता है अत: यह मृदा कि प्राकृतिक उर्वरता बढ़ाती है।
- खेजड़ी पोषण युक्त हरा व शुष्क चारा प्रदान करती है जिसे ऊँट, मवेशियों एवं बकरियों द्वारा खाया जाता है।
- खेजड़ी की फलियों को स्थानीय भाषा में सांगरी कहा जाता है जो सभी पशुधनों द्वारा बड़े चाव से खाया जाता है। पशुधनों के साथ-साथ यह स्थानीय मानव प्रजाति द्वारा भी खाद्य के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।
- खेजड़ी की फलियां स्थानीय लोगों के लिये आय का एक प्रमुख साधन है। फलियों की उपज तकरीबन 14000 किलाग्राम/किमी. होती है। जो तकरीबन 800 रू. प्रति किलों के हिसाब से बाजार में बिकती है।

औषधिय गुण

- खेजड़ी पुष्पों को कूट कर शक्कर के साथ मिलाकर गर्भावस्था में इस्तेमाल करने पर गर्भपात रोका जा सकता है।
- पेड़ की छाल के मिथेनॉल सत्व में सूजन प्रतिरोधी गुण विद्यमान होते हैं।
- पेड़ की छाल कोढ़, अस्थमा, ल्युकोडर्मा, पाइल्स इत्यादि रोगों में भी अत्यधिक उपयोगी है।

संकलन:
श्री सुनील चौधरी
डॉ. संगीता सिंह
श्री कुलदीप शर्मा

निदेशक
शुष्क वन अनुसंधान संस्थान
कृषिमण्डी, नया पाली मार्ग, जोधपुर -342 005